# Study of academic concerns of students studying in higher secondary schools of development block Bhaisiyachhana

## विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक चिंता का अध्ययन

**डॉ0 देवेन्द्र सिंह चम्याल[1], डॉ0 देवेन्द्र सिंह बिष्ट[2] & शैलजा कार्की[3]**

1– शिक्षा संकाय, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)
2– शिक्षा संकाय, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)
3– एम0एस–सी0, एम0ए0 & एम0 एड0
ईमेल– deepu.chamyal666@gmail.com

**सारॉश–** शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षणिक चिंता का अध्ययन किया है। वर्तमान समय में विद्यार्थी प्रतिस्पर्धा के दौर से गुजरते है जिससे छात्र तनावग्रस्त, चिंताग्रस्त एवं भविष्य की चिंताओं में डूबे रहते है। छात्रों की चिंता सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों है। सकारात्मक चिंता छात्रों की उपलब्धियों का मार्ग प्रशस्त करती है एवं नकारात्मक चिंता छात्रों को मानसिक तनाव एवं गंभीर अवसाद की ओर अग्रसर करती है। चिंताग्रस्त छात्र पढ़ाई पर सही से ध्यान नहीं दे पाते एवं उनकी प्रगति पर चिंता की बहुत बुरा असर पड़ता है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के शैक्षणिक चिंता का अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत शाधे में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 11वीं एवं कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है। शोध कार्य हेतु विकासखण्ड भैसियाछाना के 06 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11वीं एवं कक्षा 12वीं के 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि के अंतर्गत लॉटरी पद्धति द्वारा चुना गया है। शोध कार्य हेतु प्रो0 एस0के0 पाल, डॉ0 करूणा शंकर एवं डॉ0 कल्पना पाण्डेय द्वारा निर्मित उपकरण का उपयोग किया गया। उपकरण की विश्वसनीयता 0.66 है। उपकरण की 'फेस वैलेडिटी' निकाली गई। प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं का परीक्षण करने तथा निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए टी–फलांक का प्रयोग किया गया है।

**मुख्य शब्द– भैसियाछाना, जनपद, उच्चतर माध्यमिक, शैक्षणिक एवं चिंता।**

**प्रस्तावना–** एक व्यक्ति जो चिंता से पीड़ित होता है किसी कार्य को करने में पूर्ण शक्ति का प्रयोग नहीं कर पाता। इस प्रकार यह विचार किया जाता है कि चिंता क्रिया में रूकावट डालती है और इस तरह सीखने की गति में कमी आ जाती है। किन्तु यह विचार पूर्णतया सत्य नहीं है और जो चिंता के कार्य को ठीक से न समझने के कारण है। वास्तव में चिंता सीखने में रुकावट भी डाल सकती है और इस को प्रेरित भी कर सकती है। **बुग्लेस्की** का कथन है कि जिज्ञासा जागृत की जाती है तो दुश्चिंता उत्पन्न हो जाती है। क्योंकि जिज्ञासा दुश्चिंता का गुप्त रूप है। विद्यार्थी की जिज्ञासा जागृत करनी चाहिए और उन्हें ऐसे कार्य देने चाहिए जिनमें वह सफल हों जो चिंता सबसे पहले शैशव काल में अनुभव करते हैं वही जीवनभर हमारे व्यवहार

पर प्रभाव डालती है। यह उस समय प्रकट हो जाती है जबकि दूसरे हमारी आलोचना करते हैं, झिड़की देते हैं अथवा हमें त्याग देते हैं। जितना महत्व का हमारे लिए हमें त्यागने वाला व्यक्ति होगा और जितना अधिक दबाव हमारे ऊपर होगा उतनी ही अधिक हमारी चिंता होगी। हमारा अपना व्यवहार भी चिंता उत्पन्न कर देता है। ऐसा उस समय होता है जब हम अपने को ऐसा व्यवहार करते पाते हैं, जो हमारे अपने आत्मा के प्रति असंगत है। वे स्थितियां जो अस्पष्ट हैं, या भावात्मक है, वह भी दुश्चिंता उभारती है। भविष्य दुश्चिंता का एक बड़ा स्रोत है क्योंकि इसमें अनिश्चितता होती है। इसी कारण हम भविष्य के लिए योजना बनाते हैं और ऐसी सावधानियां लेते हैं कि भविष्य में इतना अनिश्चित ना रहे। अंत में हम यह कह सकते हैं कि एक प्रभावशाली शिक्षक वह है जो यह जानता है कि चिंता को कक्षा में कैसे उत्पन्न किया जाए और किस प्रकार अधिक चिंता का मुकाबला किया जाए। अच्छा अध्यापक चिंता के स्तर का पता रखता है जो कक्षा में प्रस्तुत होती है यदि वह इसे अधिक पाता है तो इसे कम करने की चेष्टा करता है। यदि कम पाता आता है तो इसे बढ़ाता है। **शर्मा सोनल (2019**) ने स्थानीय ग्रामीण और शहरी और स्कूल के प्रकार सरकारी और निजी के संबंध में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक चिंता में अंतर का पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया। उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ और आगरा जिले के विभिन्न स्कूलों के 355 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों का एक नमूना चुना गया था। शर्मा और साकिर 2019 द्वारा विकसित मानकीकृत उपकरण का वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक चिंता के स्तर को मापने के लिए प्रयोग किया गया था। अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी तकनीक के माध्यम से मानक विचलन और टी–टेस्टिंग थी। परिणामों ने वरिष्ठ व्यक्तियों की शैक्षणिक चिंता में महत्वपूर्ण अंतर प्रकट किया। शिक्षा एक सतत एवं जीवन प्रयत्न चलने वाली प्रक्रिया है। जिसमें छात्र–छात्राओं के व्यवहार परिवर्तन लाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

छात्र–छात्राओं को घर, परिवार, विद्यालय, समाज, समुदाय, आदि से कुछ ना कुछ सीखने को मिलता है। विद्यालय शिक्षा प्राप्ति के औपचारिक साधन होते हैं। जहां पर छात्र–छात्रायें एक निश्चित समय अवधि में निश्चित उद्देश्य के साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं। लेकिन वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि बच्चे अत्यधिक चिंतित दिखाई दे रहे हैं। उन्हें प्रवेश से लेकर परीक्षा तक कई प्रकार की चिंता सताती रहती है। उन्हें सफलता एवं असफलता के प्रति भी डर लगा रहता है। शिक्षा प्राप्ति के बाद रोजगार की चिंता सताती रहती है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का निवास स्थान, विद्यालय के प्रकार, पारिवारिक संरचना, पारिवारिक सदस्यों, उनके निवास स्थान एवं विद्यालयों की स्थिति के आधार पर शैक्षणिक चिंता का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध में विकासखण्ड भैसियाछाना को लिया गया है।

अतः उपरोक्त समस्याओं को देखते हुए शोधार्थी ने समस्या **"विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षणिक चिंता का अध्ययन**" में शोध कार्य किया।

**शोध विधि–** प्रस्तुत शोध में विकासखण्ड भैसियाछाना के छात्रों के शैक्षणिक चिंता का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत लघु शाधे में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

**जनसंख्या–** प्रस्तुत शोध कार्य में उत्तराखण्ड राज्य में स्थित विकासखण्ड भैसियाछाना के अंतर्गत समस्त सरकारी एवं गैर सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 11वीं एवं कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

**न्यादर्श–** प्रस्तुत शोध कार्य हेतु विकासखण्ड भैसियाछाना के 06 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11वीं एवं कक्षा 12वीं के 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

**न्यादर्श चयन विधि–** प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक न्यादर्श विधि के अंतर्गत लॉटरी पद्धति द्वारा चुना गया है। यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन विद्यालयों के नाम व विद्यार्थियों की संख्या निम्न रूप से दी गई है।

**शोध उपकरण–** शोध कार्य हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में चिंता का अध्ययन करने हेतु शैक्षणिक चिंता मापनी उपकरण का उपयोग किया गया। यह उपकरण प्रो0 एस0के0 पाल, डॉ0 करूणा शंकर एवं डॉ0 कल्पना पाण्डेय शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित किया गया है। इस शैक्षणिक चिंता मापनी में 35 कथन दिये गये हैं। उपकरण 2 बिंदु मापनी में बना है जो इस प्रकार हैं:–

| हाँ | नहीं |
|---|---|
| √ | X |

इस प्रकार शोधकर्ता ने 2 प्वाइंट स्केल के आधार पर अपने शोध प्रपत्र को विद्यार्थियों द्वारा पूर्ण करवाया गया। विद्यार्थियों को इन बाक्स में से किसी एक पर सही का निशान लगाने का निर्देश दिया गया, विद्यार्थी जिस कथन को उचित समझे अपने मतानुसार निशान लगायेंगे।

**प्रदत्तों का अंकीकरण–** कथनों में हाँ उत्तर के लिए 1 अंक व नहीं उत्तर के लिए शून्य अंक प्रदान किये गया है।

**उपकरण की विश्वसनीयता–** उपकरण की विश्वसनीयता परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा निर्धारित की गई थी। विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए प्रोडक्ट मोमन्ट सह सम्बन्ध ज्ञात किया गया था। सह सम्बन्ध का मान 0.66 (N=50) था।

**वैधता–** उपकरण में 10 विशेषज्ञों को सामग्री की वैधता को निकालकर 'फेस वैलेडिटी' निकाली गई छोटे से अंतराल में टेस्ट को तीन शोध अध्ययनों में प्रयुक्त किया गया।

**शोध प्रबंध में प्रयुक्त सांख्यिकी विधि–** प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं का परीक्षण करने तथा निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों– मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–फलांक का प्रयोग किया गया है।

**आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–** प्रस्तुत अध्याय में शोधकर्ता द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण परिकल्पनाओं के आधार पर किया गया है। और प्रत्येक परिकल्पना के विश्लेषण और उनकी व्याख्या द्वारा परिकल्पना का परीक्षण उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया हैं।

**तालिका 1 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का उनकी जाति के आधार पर शैक्षिणिक चिंता का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी– मान**

| क्र0 सं0 | जति | न्यादर्श आकार | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | सामान्य | 48 | 14.88 | 5.07 | 3.45 | 0.01 |
| 2. | आरक्षित | 52 | 10.80 | 6.77 | | |

D.F.=98

उपरोक्त तालिका 1 से ज्ञात होता है कि छात्र–छात्राओं के मध्यमान प्राप्तांकों के आधार पर t-मान 3.45 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 2.63 से अधिक है इसलिये गणना से प्राप्त t-मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके जाति के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है। उपरोक्त तालिका में मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य जाति के छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है। जिसका कारण यह हो सकता है कि सामान्य जाति के बालकों को आरक्षण एवं आर्थिक सहायता हेतु छात्रवृत्ति नहीं मिलती है।

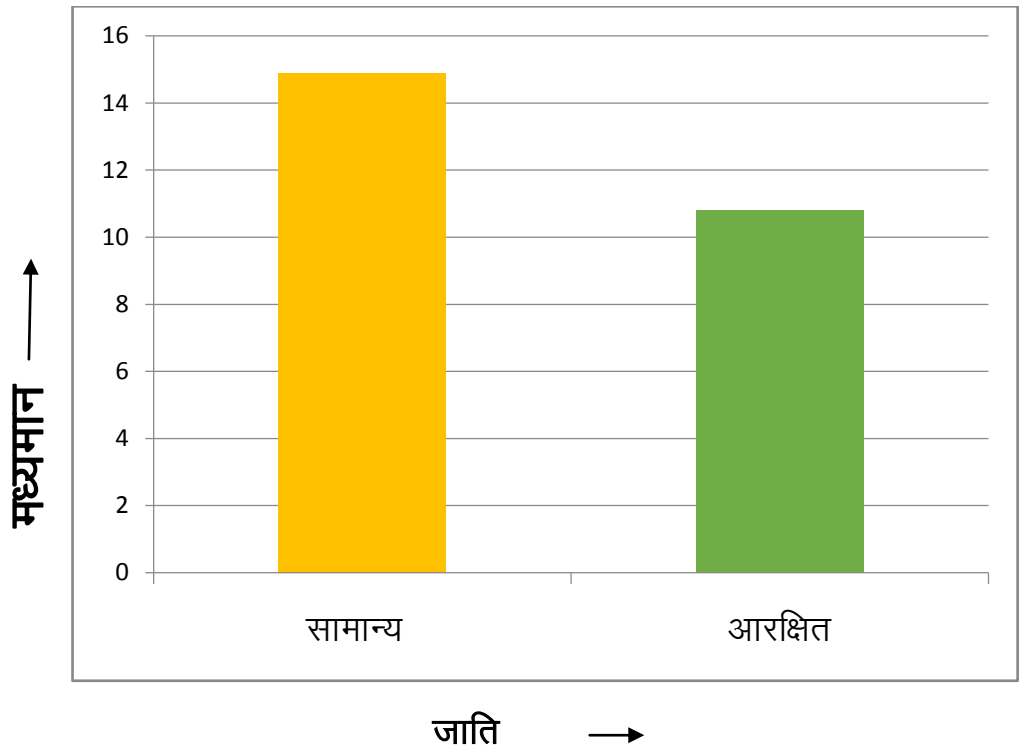


**चित्र 1 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य जाति व आरक्षित जाति के छात्र–छात्राओं का शैक्षणिक चिंता का मध्यमान**

अतः परिकल्पना " उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके सामान्य व आरक्षित जाति के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अन्तर नही है।" अस्वीकृत प्रतीत होती है।

**तालिका 2 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनकी परिवार की व्यावसायिक पृष्ठभूमि के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान**

| क्र0 सं0 | व्यावसायिक पृष्ठभूमि | न्यादर्श आकार | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | सरकारी नौकरी | 48 | 11.43 | 6.26 | 2.10 | 0.05 |
| 2. | कृषि | 52 | 13.5 | 6.64 | | |

D.F.= 98

उपरोक्त तालिका 2 से ज्ञात होता है कि छात्र–छात्राओं के मध्यमान प्राप्तांकों के आधार t- मान 2.10 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.98 से अधिक है। इसलिये गणना से प्राप्त t- मान 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके व्यावसायिक पृष्ठभूमि के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है। उपरोक्त तालिका में मध्यमान मान के आधार पर कहा जा सकता है कि कृषि व्यवसाय पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है जिसका कारण यह हो सकता है कि छात्र कृषि कार्यों में परिवार का सहयोग करने के कारण उचित तरीके से पढाई नहीं कर सकते हैं, अतः स्पष्ट होता है कि व्यावसायिक पृष्ठभूमि के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है।

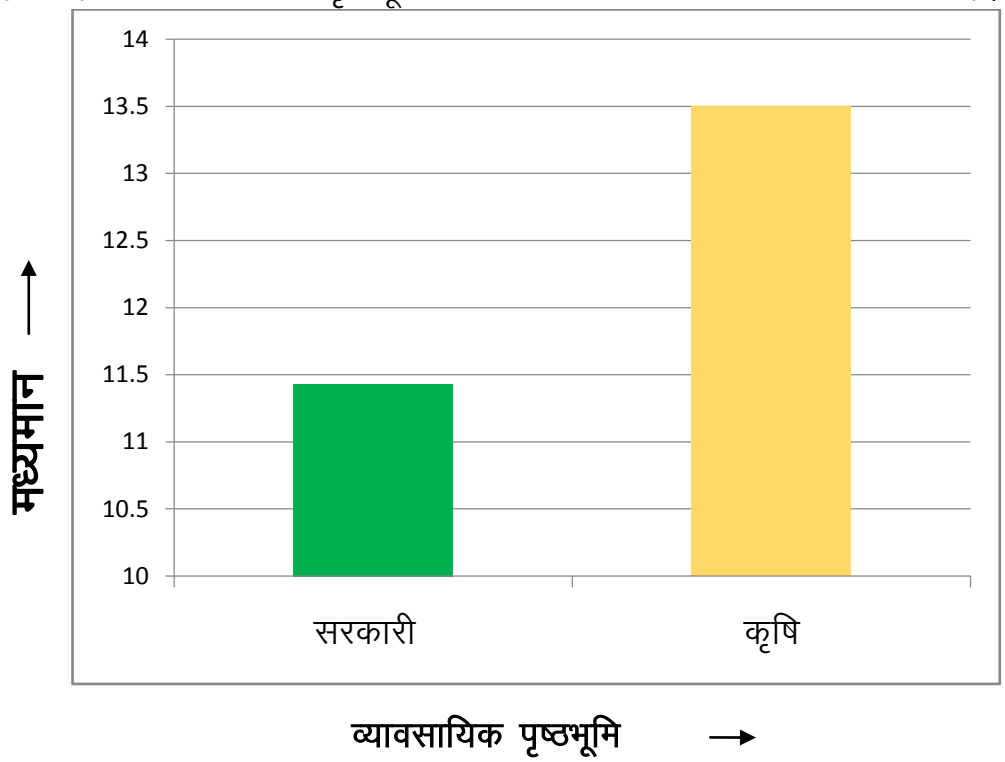


**चित्र 2 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का उनके परिवार का सरकारी व कृषि व्यावसायिक पृष्ठभूमि के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान**

अतः परिकल्पना " उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके माता–पिता के सरकारी व कृषि व्यावसायिक पृष्ठभूमि के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत प्रतीत होता है।

**तालिका 3 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों का उनकी पारिवारिक संरचना के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान**

| क्र0सं 0 | पारिवारिक संरचना | न्यादर्श आकार | मध्यमान | मानक विचलन | टी– मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | संयुक्त परिवार | 49 | 12.26 | 6.48 | 0.33 | 0.01 |
| 2. | एकल परिवार | 51 | 12.69 | 6.41 | | |

D.F. =98

उपरोक्त तालिका 3 से ज्ञात होता है कि छात्र–छात्राओं के मध्यमान प्राप्तांकों के आधार पर t-मान 0.33 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.66 से कम है। इसलिये गणना से प्राप्त t- मान 0.01 सार्थकता स्तर पर निरर्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं का उनके पारिवारिक संरचना के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अन्तर नहीं है

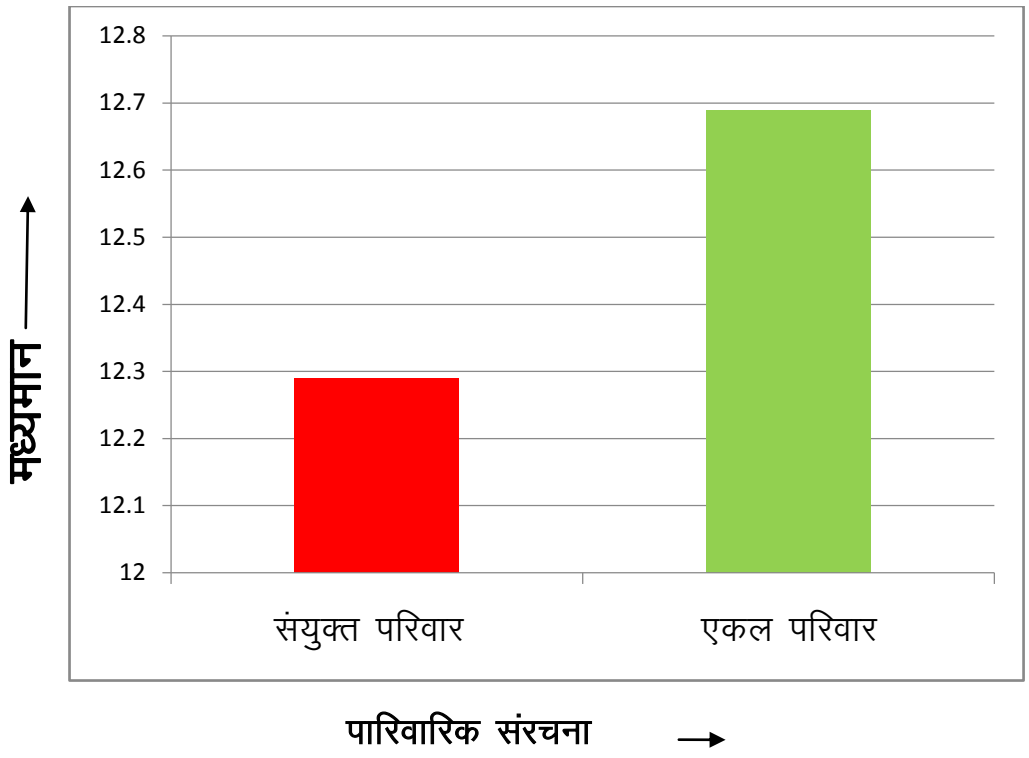


**चित्र 3 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का उनके संयुक्त व एकल परिवार के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान**

अतः परिकल्पना 03 " उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके पारिवारिक संरचना के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अन्तर नही है।" स्वीकृत प्रतीत होती है।

**तालिका 4 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके पारिवारिक सदस्यों की संख्या के आधार शैक्षणिक चिंता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान**

| क्र0 सं0 | पारिवारिक सदस्यों की संख्या | न्यादर्श आकार | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 4 से कम | 46 | 15.97 | 5.26 | 5.16 | 0.01 |
| 2. | 4 से अधिक | 54 | 10.03 | 6.35 | | |

D.F. =98

उपरोक्त तालिका 4 से ज्ञात होता है के छात्र–छात्राओं के मध्यमान प्राप्ताकों के आधार पर t-मान 5.16 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 2.63 से अधिक है। इसलिये गणना से प्राप्त t- मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके पारिवारिक सदस्यों की संख्या के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है। उपरोक्त तालिका में मध्यमान मान के आधार पर कहा जा सकता है कि चार से कम पारिवारिक सदस्यों वाले छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक चिंता अधिक है। जिसका कारण यह है कि कम सदस्य होने के कारण माता–पिता बच्चों की गतिविधि पर नजर रखते है। अतः स्पष्ट होता है कि पारिवारिक सदस्यों के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है।

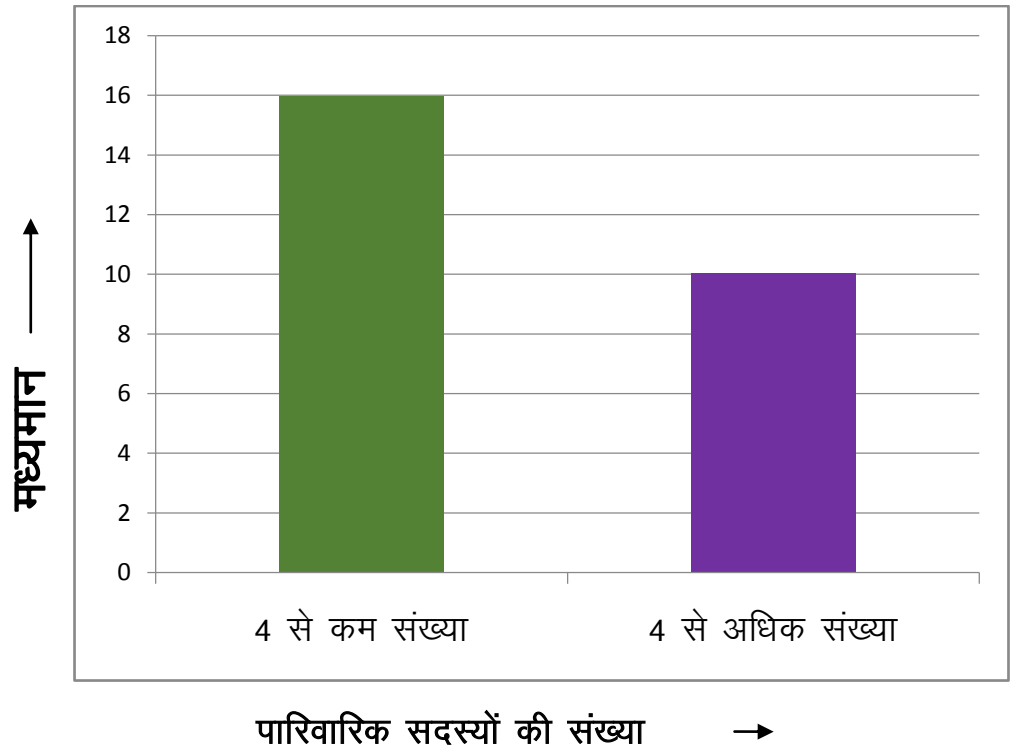


**चित्र 4 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का उनके पारिवारिक सदस्यों की संख्या 4 से कम व 4 से अधिक के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान**

अतः परिकल्पना –04 "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके पारिवारिक संदस्यों 04 से कम व 04 से अधिक के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत प्रतीत होती है।

**तालिका 5 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके निवास स्थान के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान**

| क्र0सं0 | निवास स्थान | न्यादर्श विवरण | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | शहरी | 46 | 11.80 | 6.12 | 0.63 | 0.01 |
| 2. | ग्रामीण | 54 | 12.61 | 6.69 | | |

D.F.=98

उपरोक्त तालिका 5 से ज्ञात होता है कि छात्र–छात्राओं के मध्यमान प्राप्तांकों के आधार पर t-मान 0.63 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 0.66 से कम है, इसलिये गणना से प्राप्त t-मान 0.01 सार्थकता स्तर पर निरर्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं का उनके निवास स्थान के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अन्तर नहीं है।

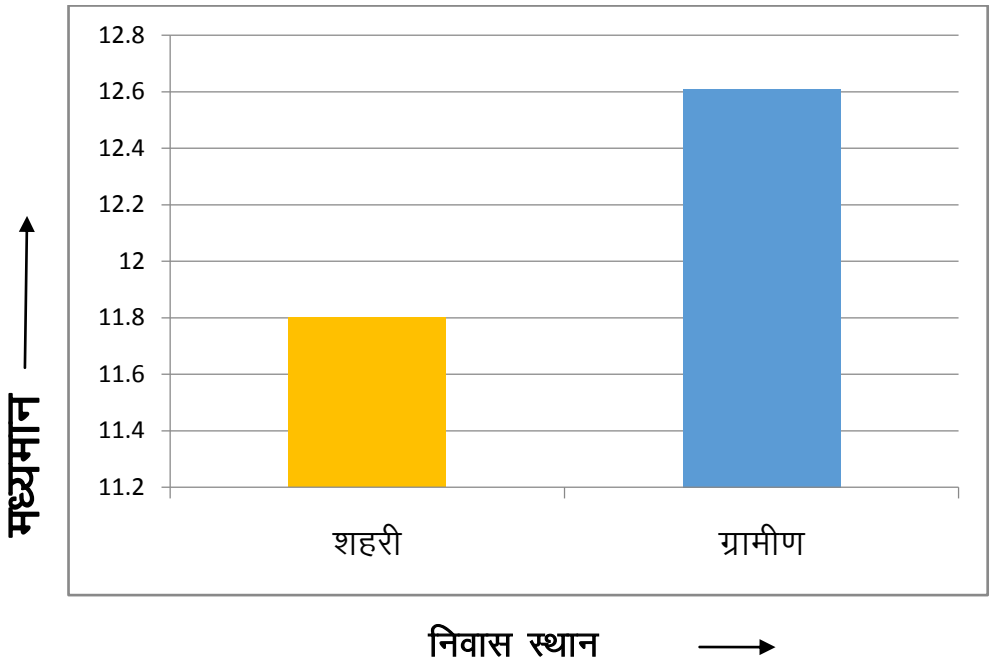


**चित्र 5 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का उनके शहरी व ग्रामीण निवास स्थान के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान**

अतः परिकल्पना–5 "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके शहरी व ग्रामीण निवास स्थान के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अन्तर नहीं है।" स्वीकृत प्रतीत होती है।

**तालिका 6 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके विद्यालय की स्थिति के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान**

| क्र0सं0 | विद्यालयों की स्थिति | न्यादर्श विवरण | मध्यमान | मानक विचलन | टी–मान | सार्थकता स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | शहरी | 47 | 9.93 | 6.76 | | |
| 2. | ग्रामीण | 53 | 14.79 | 4.77 | 4.15 | 0.01 |

D.F. =98

उपरोक्त तालिका 6 से ज्ञात होता है कि छात्र–छात्राओं के मध्यमान प्राप्तांकों के आधार पर t- मान 4.5 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 2.63 से अधिक है। इसलिये गणना से प्राप्त t-मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके विद्यालय की स्थिति के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है।

उपरोक्त तालिका में मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण विद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है। जिसका कारण यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय जाने हेतु परिवहन की सुविधायें नहीं है एवं रूढ़िवादी विचारधारायें अधिक है। अतः स्पष्ट होता है कि विद्यालय की स्थिति के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है।

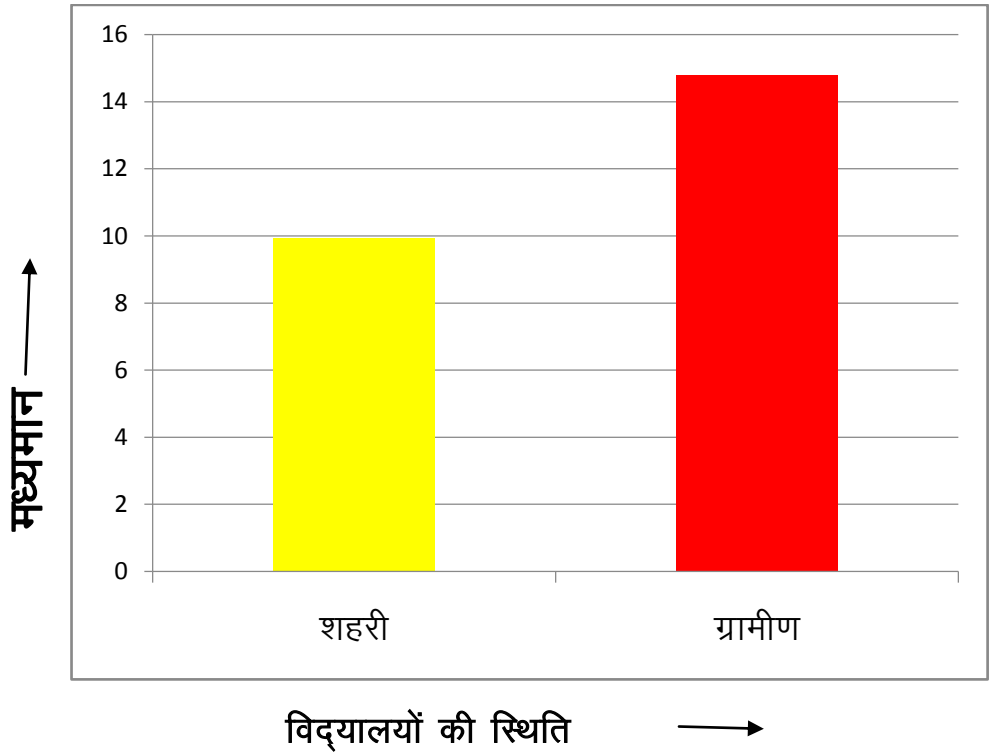


**चित्र 6 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का उनके विद्यालय के शहरी व ग्रामीण स्थिति के आधार पर शैक्षणिक चिंता का मध्यमान**

अतः परिकल्पना 06– "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके शहरी व ग्रामीण विद्यालयों की स्थिति के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अन्तर नहीं है।" अस्वीकृत प्रतीत होती है।

**अध्ययन के निष्कर्ष–** प्रस्तुत शोध के आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते है–

1– विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके जाति के प्रकार के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है। मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य जाति के छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है।

2– विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके व्यावसायिक पृष्ठभूमि के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है। मध्यमान मान के आधार पर कहा जा सकता है कि कृषि व्यवसाय पृष्ठिभूमि से आने वाले छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है।

3– विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं का उनके पारिवारिक संरचना के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अन्तर नहीं है।

4– विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके पारिवारिक सदस्यों की संख्या के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है। मध्यमान मान के आधार पर कहा जा सकता है कि चार से कम पारिवारिक सदस्यों वाले छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है।

5– विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं का उनके निवास स्थान के आधार पर शैक्षणिक चिंता में कोई अन्तर नहीं है।

6– विकासखण्ड भैसियाछाना के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं का उनके विद्यालय की स्थिति के आधार पर शैक्षणिक चिंता में अन्तर है। मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण विद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक चिंता अधिक है।

**शैक्षिक निहितार्थ–** प्रस्तुत लघु शोध कई प्रकार से उपयोगी सिद्ध हो सकता है जो निम्न प्रकार है –

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शैक्षणिक चिंता का अध्ययन करने में सक्षम है।

2. अध्ययन द्वारा विद्यालय प्रशासन के द्वारा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्रों में शैक्षणिक चिंता के निवारण हेतु शिक्षण विधि, प्रविधि, पाठ्यक्रम, पाठ्य–सहभागी क्रियाओं, आदि के प्रयोग का अध्ययन किया जा सकता है।

3. अध्ययन की सहायता से उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता को जानकर उनके कारणों का पता लगाया जा सकता है तत्पश्चात विद्यार्थियों में शैक्षिक चिंता दूर करने के उपाय बताये जायेंगे।

4. प्रस्तुत शोध के परिणामों द्वारा नकारात्मक चिंता को सकारात्मक चिंता में बदलने का प्रयास किया जा सकता है।

5. प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणामों से चिंता के कारणों का पता एवं सकारात्मक एवं नकारात्मक चिंता में अन्तर का पता होना शिक्षकों, अभिभावकों, प्रधानाचार्य, प्रशासकों, प्रबन्धकों, नीति निर्माताओं को समझने में आसानी होगी।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–**


1. कौल, एल० (2012)। *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली*। नोएडाः विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
2. कौल, एल0 (2019)। *शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली*। नई दिल्लीः हाउस प्राइवेट लि०।
3. गुप्ता एस0पी0 & गुप्ता अलका (2009)। *उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान*। इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन।
4. गेरैट, एच०ई० (2000)। *शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग*। लुधियानाः कल्याणी पब्लिशर्स।
5. सिंह, ए0के0 (2010)। *उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान*। दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास।
6. aggarwal, Y.P.(2013). *Statistical methods; concepts applications and computations*. New Delhi: Sterling Publishers Private Limited.
7. Baghel, D.S.(2024). *Research methodology*. Agra: S.B.P.D. publications
8. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2014). *Research in education.* Delhi: PHI Learning Private Limited.
9. Guilford, J.P.(1978). *Fundamental statistics in psychology and Education*. Aukland: Mc Graw Hill book company.
10. Gupta, S. (2005). *Education in emerging India*. Delhi: Shipra publication.
11. Mathur, S.S. (2013). *Educational psychology*. Agra: B.P. Printer.
12. Mukerji, S. N. (1958). *An introduction to Indian Education*. Baroda: Acharya book depot.
13. Seetharamu, A.S. (1989). *Philosophies of Education.* New Delhi: Ashish Publishing House.
14. Sharma, Jyoti (2015). *Measurement and Evaluation in Education*. Agra: Agrawal Publication.

**वेबसाइट**

www.google.com
www.sodhganga.inflibnet.ac.in
https://pib.gov.in
www.amarujala.com